कोरोना,लॉकडाउन और तकनीक शिक्षा

कोरोना के गिरफ़्त में पूरा विश्व है। ना सिर्फ़ अर्थ व्यवस्था बल्कि शिक्षा व्यवस्था भी चरमरा रही है। राष्ट्रीय लॉकडाउन के प्रथम सप्ताह में लोगों को छुट्टी मनाने का आनंद आ रहा था । लेकिन दूसरे सप्ताह से ही यह समझ में आने लगा कि कोरोना के साथ मानव की यह जंग आसानी से ख़त्म होने वाली नहीं। आख़िर कब तक घर बैठना होगा। शिक्षक और छात्र सबों को पाठ्यक्रम पूरा करने की चिंता सताने लगी। परीक्षाएँ कैसे होंगी। सेमेस्टर कैसे पूरा होगा ? विश्व विद्यालय का सत्र विलम्ब हो जाएगा। दो साल की बीएड की ट्रेनिंग अब इतनी लम्बी हो जाएगी कि नौकरी के सपने बिखर जाएँगे। छात्रों के भविष्य के प्रति शिक्षाविदों की चिंता बढ़ती जा रही थी। अंततः इक्कीस दिनों के लॉकडाउन की घोषणा के बाद,बस विकल्प ढूँढने में लग गयी पूरी शिक्षा व्यवस्था। सीबीएससी, आईसीएससी तथा विभिन्न विद्यालय संगठनों और बोर्ड ने विचार मंथन किया क्योंकि पहली बार देश के सामने एक ऐसी समस्या थी जिसका एक मात्र उपाय था एक दूसरे से अलग रहना । इस विकट परिस्थिति में तकनीकी शिक्षा बहुत उपयोगी सिद्ध हुई। सोशल मीडिया ने तो पहले ही वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को अपना लिया था पर अब शिक्षा को भी उसका महत्व समझने में वक़्त नहीं लगा। सभी विद्यालय और महाविद्यालयों को विडियों कांफ्रेंसिंग कर कक्षाएँ आयोजित करने का निर्देश दिया गया । यूजीसी हो या विद्यालय ,परीक्षा बोर्ड, सब ने सम्बद्ध शैक्षणिक संस्थानों को पाठ पाठन में लगने का निर्देश जारी कर दिया।

लौह नगरी जमशेदपुर के कई शैक्षणिक संस्थानो में स्मार्ट क्लासेज़ थे, लगभग सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों में कम्प्यूटर भी थे और शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के हाथ में उनके मोबाइल फ़ोन। ज़रूरत थी केवल दुनिया को मुट्ठी में करने की। उचित दिशा निर्देश के साथ ही शिक्षकों का मार्गदर्शन क्या मिला विद्यार्थियों के ज्ञान चक्षु खुल गए। चलिए मिलते हैं कुछ प्राचार्यों और शिक्षिकाओं से जिन्होंने अपने इस लॉकडाउन में भी अध्ययन और अध्यापन का कार्य जारी रखा। राह में अड़चनें आयीं , पर अपने हौसले से अपनी कर्तव्यनिष्ठा से विद्यार्थियों को भी प्रेरित करती रहीं।

गृहस्वामिनी अप्रैल 2020

अब्दुल बारी मेमोरियल कॉलेज की प्राचार्या **डॉ मुदिता चंद्रा** कहतीं हैं कि तकनीक से जुड़ कर विश्व के किसी भी कोने में रहने वाले विद्वानों से सम्पर्क किया जा सकता हैं। तकनीक के प्रभाव को अनदेखा नहीं कर सकते। हमारे कॉलेज में कोरोना के पहले भी ईमेल, विडियों कांफ्रेंस , डिजिटल शिक्षण आदि की सुविधाएँ उपलब्ध थीं।परंतु कॉलेज बंद होने के कारण तकनीक शिक्षण में कठिनाई हो रही है। नयी चुनौतियों का सामना हमारे अनुभवी प्रोफ़ेसर बहुत ही कुशलता से कर रहे हैं। ऑन लाइन उपलब्ध सामग्री विडियों आदि को छात्र को बताना और उस से अधिक से अधिक लाभ उठाने के तरीक़े प्रोफ़ेसर बताते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले इन छात्रों को दिशा निर्देश की ज़रूरत है फिर स्वाध्ययन और चिंतन उन्हें ही करना हैं ।अधिकांश छात्र ग़रीबी रेखा के नीचे हैं जिनके पास नेट की भी सुविधा नहीं हैं इसलिए थोड़ी कठिनाई होती है उन्हें।

श्रीमती परिणीता शुक्ला राजस्थान मैत्री संघ हाई स्कूल की प्राचार्य हैं और अपनी शिक्षिकाओं के साथ साप्ताहिक बैठक लेती हैं और उन्हें इस बात की ख़ुशी है कि शिक्षिकाओं ने मात्र तीन दिन में नयी तकनीक से शिक्षा देना सीख लिया। कक्षा छः तक के बच्चों के पास अपना लैप टॉप नहीं होता और कई अभिभावक उन्हें मोबाइल भी नहीं देते इसलिए हम व्हाट्सएप पर ही उन्हें गृहकार्य दे देते हैं। अभिभावक ही अपने बच्चों को काम बता देते हैं जिसे वे कर लेते हैं। क्लास वर्क रोज़ चेक नहीं कर पा रहे हैं लेकिन बच्चों को कुछ पूछना हो तो वे व्हाट्सएप समूह में पूछ लेते हैं। कोरोना से पहले भी स्मार्ट क्लास होते थे लेकिन अब तो बच्चे , शिक्षक और अभिभावक सभी एक सीढ़ी आगे

बढ़ गए हैं। अब सब की सृजनशीलता भी बहुत बढ़ गयी है। परिणीता अपने छात्रों को कहती हैं कि खूब कहानियाँ पढ़ो, मम्मी पापा के साथ समय व्यतीत करो और स्वाध्ययन की आदत डालो।

जे एच तारापुर स्कूल की प्राचार्या श्रीमती लता शरत स्वयं उच्च कक्षा में अर्थशास्त्र की क्लास लेती हैं। इनके स्कूल में प्रत्येक कक्षा का अपना एक व्हाट्सएप समूह है। जिसमें उस क्लास की शिक्षिकाएँ भी शामिल हैं। इसके अलावा स्कूल का वेबसाइट भी संवाद का एक माध्यम है। ज़ूम ऐप के द्वारा सभी शिक्षिकाएँ अपने विद्यार्थियों से जुड़ी हुई हैं । सभी छात्र जब एक साथ इस ऐप के द्वारा जुड़े होते हैं तब कभी कभी नेटवर्क की समस्या उत्पन्न हो जाती है। कोरोना से पहले भी बच्चों के वर्क शीट ऑनलाइन भेजे जाते थे। इस कठिन परिस्थिति में घर बैठ कर बच्चों को पढ़ाई के साथ दैनिक जीवन में काम आने वाले व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने की भी कोशिश करनी चाहिए।

विवेकानंद इंटरनेशनल स्कूल की प्रधानाध्यपिका **डॉ निधि श्रीवास्तव** बताती हैं कि उन्होंने भी प्रत्येक कक्षा का एक व्हाट्सएप समूह बनाकर शिक्षिकाओं को कक्षा के बच्चों के साथ जोड़ दिया है। प्रत्येक विषय के लिए रूटीन बनाकर क्लास लिया जाता है। शिक्षक नोट्स भी इसी के ज़रिए देते हैं और कुछ प्रमुख विषयों के विडियों बनाकर भी शेयर करते हैं। आज़ाद बस्ती के बच्चों के पास अपना लैप टॉप नहीं लेकिन स्मार्ट फ़ोन सबके पास है इसलिए व्हाट्सएप के माध्यम चुना गया। कभी कभी नेटवर्क की भी समस्या होती है लेकिन समय का कोई दबाव नहीं इसलिए बच्चें अपनी सुविधा से गृह कार्य कर लेते हैं ।बच्चों को क्लास में बैठ कर पढ़ने की आदत है इसलिए वह उन्हें आसान लगता है। कुछ बच्चों को वर्चुअल क्लास बहुत भा रहा है। इसमें पढ़ना उन्हें मनोरंजक और रुचिकर लग रहा है। डॉ निधि अपने छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत हैं और वे कहती है कि जीवन में किसी भी प्रकार की कठिनाई के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए और हर परिस्थिति में अपने को ढाल लेना चाहिए।

श्रीमती ऋतु अस्थाना लोयोला स्कूल में सात से बारह साल के बच्चों को साइंस, इंग्लिश और सोशल साइंस पढ़ाती हैं। इस उम्र के बच्चों के पास ना तो फ़ोन है ना लैप टॉप इसलिए ऋतु स्कूल वेब साइट से ईमेल द्वारा संदेश भेज कर अभिभावकों के माध्यम से बच्चों के साथ सम्पर्क में रहती हैं। उनके प्रोजेक्ट स्कूल खुलने पर लिए जा सकेंगे। स्कूल में हमलोग उन्हें स्मार्ट क्लास में पढ़ाते हैं जो

उन्हें बेहद रोचक लगता है। आज कल शिक्षक केवल पढ़ाता नहीं वह बच्चों को सुविधाएँ दे कर उन्हें स्वयं ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

श्रव्य से अधिक दृश्य माध्यम इस उम्र के बच्चों के लिए अधिक प्रभावी होते हैं। ऋतु अपने नन्हें मुन्ने छात्रों को कहती हैं कि घर पर रह कर जीवन की सुखद स्मृतियों को संजोने का अवसर मिला है । पारिवारिक संस्कारों को सीखने की उम्र है यह इसका सदुपयोग करना चाहिए।नए नए कलाओं को सीखने का ,अपनी कमज़ोरियों को दूर भगाने का अवसर मिला है , इसका भरपूर लाभ उठाना चाहिए। इस पीढ़ी को यह सब देखना सीखना हो रहा है जो न भूतो न भविष्यति सम्भव होगा।

श्रीमती संगीता अम्बशठ बायोलॉजी पढ़ाती हैं कक्षा नौ, दस ग्यारह को। इन्होंने अपने छात्रों को व्हाट्सएप और ज़ूम दोनो से जोड़ कर रखा है। पहली बार इस तकनीक से वो पढ़ा रही हैं , बायोलॉजी के लिए बोर्ड पर चित्र बना कर पढ़ाने की अभ्यस्त थी , इसलिए शुरू में दिक़्क़त हो रही थी । लेकिन ज़ूम ऐप से कोई परेशानी नहीं होती। बच्चों की उपस्थिति भी दिखती है और वह रिकॉर्ड हो जाता है। वर्कशीट बनाकर अपने विभागाध्यक्ष को दे देती हैं जो उसे जाँचने के बाद ही बच्चों को देतीं हैं। विडियों द्वारा भी क्लास लिया जाता है। संगीता कहती हैं कि बच्चों के साथ साथ हमलोग भी नयी तकनीक का प्रयोग सीख रहें हैं और इसमें काफ़ी आनंद आ रहा है। हर दिन मैं तैयारी करती हूँ नए विषय का। नए सत्र में नए बच्चे मेरी क्लास में आए हैं इसलिए इस नयी तकनीक के साथ मैं बहुत उत्साहित हूँ। मैं उन्हें घर में रह कर अपनी माँ का हाथ बँटाने के लिए कहती हूँ।

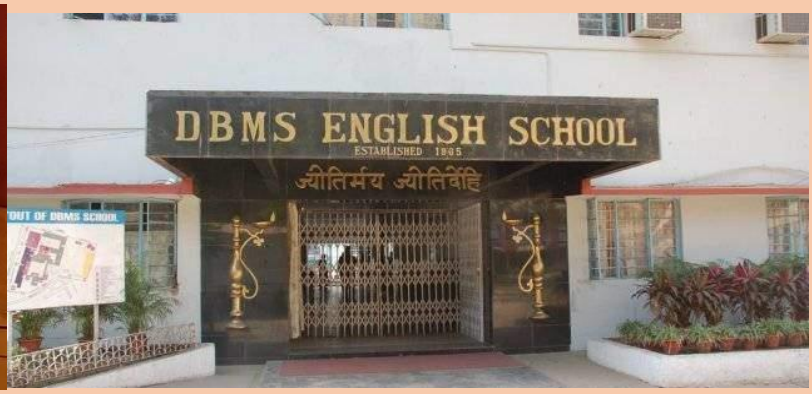

डीबीएमएस स्कूल कदमा की प्रधानाध्यापिका **श्रीमती मीना बगली** कहती हैं कि उनके स्कूल में यूकेजी से प्लस टू तक की कक्षा है। स्कूल के वेबसाइट और ब्लॉग के माध्यम से वे अपने सभी शिक्षिकाओं से सम्पर्क में रहती हैं और उनकी शिक्षिकाएँ भी अपने छात्रों के साथ आधुनिक तकनीक के माध्यम से जुड़ी हैं । समय की माँग यही है और तकनीक के इस युग में सम्पर्क में रहने के लिए यह एक सशक्त माध्यम है।हालाँकि इस तकनीक का प्रयोग हर शिक्षण संस्था में हो रहा है लेकिन फिर भी मुझे लगता है कि आमने सामने बैठ कर जो संवाद होता है वह सम्प्रेषण का सबसे अधिक सशक्त माध्यम है। छात्रों को बेहतर समझने के लिए , उनको किताबों के अलावा भी किसी प्रकार की जानकारी देने के लिए मुझे लगता है कि शिक्षक और शिक्षार्थी को एक दूसरे के साथ साथ बैठना चाहिए। तकनीक कभी भी मानवीय स्पर्श और संवेदना की जगह नहीं ले सकती ।

डॉ कल्याणी कबीर जामिनी कांत महतो कॉलेज की प्राचार्या हैं। यह कॉलेज सालबोनी के ग्रामीण इलाक़े में स्थित है। उच्च शिक्षा से जुड़े शिक्षाविद परिपक्व छात्रों से जुड़े होते हैं।बदलते वक्त के साथ वे अपने को ढाल लेने में समर्थ होते हैं। इन दिनो तकनीक शिक्षकों और छात्रों के लिए राम सेतु का काम कर रहा है। ऑडियो और विडियों लेक्चर दिए जा रहे हैं। सुदूर गाँव के छात्रों को नेटवर्क की समस्या होती है इसलिए थोड़ा लचीलापन समय को लेकर रहता है। व्हाट्सएप पर शिक्षण सामग्री उपलब्ध कर दी जाती है और छात्र अपनी सुविधानुसार नेटवर्क उपलब्ध होने पर प्रतिक्रिया देते हैं। ऑनलाइन अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए मैंने एक मीटिंग पहले व्याख्याताओं के साथ की। चाणक्य ने कहा था की प्रलय और निर्माण शिक्षक की गोद में खेलते हैं। कोरोना के इस भयावह

दौर में भी शिक्षक समुदाय नयी पीढ़ी के साथ मिलकर राष्ट्र का निर्माण कर रहा है। डॉ कल्याणी कहती हैं कि शिक्षकों ने ना कभी रुकना सीखा है ना चुनौतियों से घबराना। हम होंगे कामयाब।

डीबीएमएस कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन में मैंने **(डॉ जूही समर्पिता)** आन लाइन शिक्षा तकनीक का प्रयोग २०१८ अगस्त में जब कॉलेज का शुभारम्भ हुआ तभी से किया जा रहा है । श्रीमती नीलकंठन और श्री चंद्रशेखर जैसे अनुभवी शिक्षाविद् यह जानते थे कि समय की माँग है तकनीक के द्वारा शिक्षा ग्रहण करना । बी एड के छात्र जो भविष्य के शिक्षक हैं उन्हें नयी पद्धति से पढ़ाना सीखना ही चाहिए। गूगल ड्राइव पर प्रत्येक छात्र की अपनी ई-मेल आईडी है और प्रत्येक शिक्षक पठन सामग्री उनके साथ साझा करता है। छात्र घर बैठे पीपीटी देख कर अपना नोट्स तैयार कर सकते हैं। प्रत्येक कक्षा के बाद शिक्षक एक फ़ीड्बैक फ़ॉर्म भरते हैं जिस से सबको पता चलता है कि किस विषय में कितनी पढ़ाई हो चुकी है। कोरोना के बाद शिक्षकों ने यूट्यूब पर विडियो अपलोड कर दिया है। एक गूगल क्लास बनाया गया जहां शिक्षक छात्रों के द्वारा पूछें गए प्रश्नों के उत्तर देतें हैं। भविष्य के शिक्षकों की राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका है इस बात को हम सबको समझना होगा।

लोयोला कॉलेज ऑफ एजुकेशन के प्राचार्य **डॉ फादर पी एंथोनी राज, एस.जे**. का कहना हैं कि इस कोरोना महामारी के दौर में हम शिक्षकों विद्यार्थियों से विडियो कॉन्फ्रेंसिंग एप के माध्यम से संपर्क करते हैं और कक्षाएं भी हम वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग एप के माध्यम से ले रहे है और अपने नोट्स छात्रों के साथ व्हाट्सप्प ग्रुप में साझा करते है और अगर किसी छात्र को किसी भी तरह की समस्या होती है तो वह अपना सवाल व्हाट्सप्प ग्रुप में पूछ सकता है |इन तकनीकों का उपयोग कर पढ़ाना काफी प्रभावशाली और आसान हैं, लेकिन कभी - कभी हमें नेटवर्क की समस्या का सामना करना पड़ता है

| कुछ जगहों पर अच्छी नेटवर्क नहीं होने के कारण कुछ छात्र ऑनलाइन कक्षाओं में भाग नहीं ले पातें हैं | अगर नेटवर्क की समस्या न हो तो ये तकनीक काफी कारगर साबित होंगी |कुछ छात्रों के पास लैपटॉप और लगभग सभी छात्रों के पास स्मार्टफोन उपलब्ध हैं |कोविद -19 ने पूरी दुनिया को लॉक डाउन कर दिया है। लेकिन, ऑनलाइन दुनिया हमारे लिए बंद नहीं हुई है। यह एक नया दौर है इसलिए ऑनलाइन कक्षाओं की ओर रुख करें और विश्वास करें कि आप शिक्षक होने के साथ-साथ शिक्षार्थी भी हैं। इसका लाभ उठाएं।

मिसेज़ केएमपीएम वोकेशनल कॉलेज हायर एजुकेशन की प्राचार्या **मीता जाखनवाल** का कहना है कि इस वैश्विक आपदा में तकनीक के माध्यम से शिक्षा ही एक मात्र विकल्प हैं जिसके कारण ही लॉकडाउन की स्थिति में भी शिक्षण का कार्य अनवरत रूप से चल रहा है।हम शिक्षकों और विद्यार्थियों से मोबाइल फोन, ईमेल और परेन्टसलरम.कॉम ऐप के जारिए जुड़े रहतें हैं।हम गोटूमिटिंग और ज़ूम के माध्यम से क्लासेज़ लेते हैं नेटवर्क की समस्या कभी कभी होती हैं।लॉकडाउन के पूर्व हमनें कभी ऑनलाइन शिक्षा का सहारा नहीं लिया था।थ्योरी पेपर आसानी से पढाया जाता हैं लेकिन प्रैक्टिकल में थोड़ी सी परेशानी होती हैं।इस आपदा के समय यही कहना चाहूंगी कि घर में रहें, सुरक्षित रहें और एक स्वस्थ जीवन शैली अपनाएँ।

डीबीएमएस कैरियर एकेडमी की प्राचार्या स **सोमा बनर्जी** कहती हैं कि हम नियमित रूप और पीसीपी क्लासेस कर रहे हैं एनआईओएस विद्यार्थियों के कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के लिए । हम अपने विद्यार्थियों को ज़ूम ऐप द्वारा ऑनलाइन क्लासेस लेते हैं साथ ही ग्लासरूम क्लासेस पीसीएस के

मदद से विडियों अपलोड करतें हैं। शिक्षक अपने कक्षा के विद्यार्थियों से व्हाट्सएप और फोन कॉल के माध्यम से भी जुड़े हुए हैं। इसमें कोई शक नहीं ज़ूम ऐप ऑनलाइन क्लासेज के लिए बेहतरीन है लेकिन नेटवर्क कभी-कभी समस्याएं पैदा करती है ।शिक्षक अपने लेक्चर के वीडियो को अपलोड कर देती हैं जिसे विद्यार्थी जब भी चाहे डाउनलोड कर सकतें हैं । लॉकडाउन के पहले हमनें कभी भी इस तरह ऑनलाइन तकनीक का प्रयोग नहीं किया था। मैं अपनी विद्यार्थियों को कहना चाहूंगी कि यह एक अच्छा समय है जिसमें आप अपनी प्रतिभा और कौशल को निखारने में लगा सकते हैं । अपने समय को परिवार और कैरियर को बेहतर बनाने के लिए उपयोग करें।

मोतीलाल नेहरू पब्लिक स्कूल की प्राचार्या **अंशु तिवारी** कहती हैं कि लॉकडाउन के कारण तकनीक के सहारे शिक्षण का कार्य हो रहा है। हम क्रायोन्ज़ ऐप, गोटूमिटिंग,व्हाट्सएप, एसएमएस, हैंगआउट, स्कूल की वेबसाइट आदि का उपयोग कर रहें हैं तकनीक शिक्षा के लिए। जहाँ जूनियर स्कूल के विद्यार्थियों के लिए व्हाट्सएप का प्रयोग किया जा रहा हैं वही हाईस्कूल के विद्यार्थियों के लिए ज़ूम ऐप बेहतर विकल्प हैं।जिससे एक साथ सभी विद्यार्थियों से जुड़ा जा सकता है।स्मार्ट बोर्ड,वर्ड फाइल, एक्सेल फाइल, विडियों,यूट्यूब और पीपीटी शेयर हो सकता है ऑनलाइन। जूम ऐप के उपयोग हमारे शिक्षक बहुत ही सफलतापूर्वक कर रहे हैं और इसके बेहतर परिणाम भी मिल रहे हैं । हालांकि मेरा अभी भी मानना है कि क्लासरूम टीचिंग ज्यादा प्रभावशाली तरीका है ।तकनीकी शिक्षा में सबसे बड़ी समस्या है नेटवर्क की।फोन की मेमोरी, स्टोरेज प्रॉब्लम के कारण फोन हैंग हो जाते हैं।कुछ अभिभावकों के पास दो मोबाइल हैं और बच्चे तीन तो तीनों बच्चें एक साथ क्लासेज नहीं कर सकते।कुछ शिक्षक और अभिभावक इस प्रकार के तकनीकी शिक्षा को ठीक से समझ नहीं पा रहें हैं। इसके साथ साथ आँखों और स्वस्थ्य पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता हैं।तकनीकी शिक्षा के माध्यम से एक दूसरे का फोन नम्बर आसानी से मिल जाता हैं जिसका मिस यूज भी हो सकता हैं।हर चीज की तरह तकनीकी शिक्षा के भी फायदे और नुकसान दोनों ही हैं यह हम पर निर्भर करता है कि हम उसका उपयोग किस रूप में करें।इस मुश्किल समय में हमें तकनीक का इस्तेमाल अपने ज्ञान वृद्धि, नये नये तकनीक को सीखने और एक दूसरे के संम्पर्क में रहनें का होना चाहिए।

प्रस्तुति-डॉ जूही समर्पिता

प्राचार्य ,डीबीएमएस कॉलेज ऑफ एजूकेशन

गृहस्वामिनी अप्रैल 2020